MAHARAJA COLLEGE ,ARA

PG @ SEM- III

CC-10 : आधुनिक हिंदी काव्य

Unit – 1 साकेत (मैथिलीशरण गुप्त)

मैथिलीशरण गुप्त (1886–1964)ई.

मैथिली शरण गुप्त 'द्विवेदी युग' के प्रसिद्ध कवि हैं। इनका जन्म 1886 ई0 में उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के चिरगांव में हुआ था। ये पांच–छः दशक तक लगातार हिंदी साहित्य की सेवा करते रहे। अब तक इनकी चालीस मौलिक और छः अनुदित रचनाएँ प्रकाशित है। गुप्त जी की आरंभिक रचनाएँ कलकत्ता से निकलने वाली 'वैश्योपकारक' पत्रिका में प्रकाशित हुई। बाद में इनका परिचय महावीर प्रसाद द्विवेदी से हुआ। अब इनकी रचनाएँ 'सरस्वती' में प्रकाशित होने लगी। द्विवेदी जी के प्रोत्साहन से गुप्त जी काव्य–कला में अभूतपूर्व निखार आया।

इनकी प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' का प्रकाशन 1910 ई. में हुआ। सन् 1912 में 'भारत भारती' प्रकाशित हुई। इसी

ग्रंथ ने हिंदी प्रेमियों को गुप्त जी की ओर आकृष्ट किया। ''भारत भारती' ने हिंदी भाषियों में अपनी जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावनाएँ जगाई। तभी से ये राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्ध और लोकप्रिय हुए। इनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाओं में 'साकेत'—1932, 'यशोधरा'—1933, 'द्वापर', 'जयभारत' और 'विष्णुप्रिया' विशेष उल्लेखनीय है। इनकी मृत्यु 1964 ई. में हुई।

गुप्त जी भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता थे। इनके काव्य के अनुशीलन से यह परिलक्षित होता है, कि ये मानव जीवन का लक्ष्य संन्यास को नहीं, अपितु पुरुषार्थ को मानते हैं। अंतिम क्षण तक कर्तव्य पालन ही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। धार्मिक दृष्टि से राम में इनकी अगाध श्रद्धा है। अन्य कोई देवता इनके हृदय को मुग्ध नहीं कर पाता। तुलसीदास के 'मानस' के बाद हिंदी में रामकाव्य का दूसरा स्तम्भ गुप्त जी की रचना 'साकेत' ही है।

नारी के प्रति इनका दृष्टिकोण बहुत ही आदरपूर्ण

रहा है। इनके अनुसार नारी विलास का निर्जीव उपकरण मात्र न होकर पुरुष के कार्यों में सहभाग लेने वाली अर्द्धांगिनी है। जिनके सहयोग के बिना पुरुष के सभी कार्य अधूरे हैं। उर्मिला, यशोधरा और विष्णुप्रिया इनकी अपूर्व और अद्भूत चरित्र–सृष्टियाँ हैं। इनके साथ ही माण्डवी का पूर्व रामायणों से अधिक चित्रण, कैकेयी के चरित्र में परिवर्तन, हिडिंबा आदि के चित्रणों का पुनःनिर्माण – इनके जीवंत प्रमाण है। भारतीय नारी जीवन की सहजता और कोमलता का वर्णन वे इन शब्दों में करते है।–

''अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आंखों में पानी।।''

गुप्त जी आधुनिक युग में प्रबंध काव्य के संरक्षक हैं। इन्होंने दो महाकाव्य और उन्नीस खण्ड काव्य की रचना की। इनके अतिरिक्त इन्होंने तीन नाटक, सभी प्रकार के प्रगीत और मुक्तक भी लिखे। किंतु नाटकों, प्रगीतों और मुक्तकों में वैसी भाव–सृष्टि नहीं कर पाये, जैसा की प्रबंध काव्यों में । वे मूलतः प्रबंधकार हैं।

MAHARAJA COLLEGE ,ARA

गुप्त जी की रचनाओं में युग–स्वर गुंजता है। उन्होंने भारत के गौरवपूर्ण अतीत को प्रस्तुत करने के साथ–साथ भविष्य का भी सुंदर रूप प्रस्तुत किया है –

'मैं अतीत नहीं भविष्यत् भी हूँ आज तुम्हारा।'

गुप्त जी मानवता वाद के पोषक और समर्थक हैं। उनके काव्य में निर्गुण नारायण ही पृथ्वी को स्वर्ग बनाने के लिए भूतल पर अवतार लेते हैं –

'भव में नव वैभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।
सन्देश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
ठस भूतल को स्वर्ग बनाने आया ।'

खड़ी बोली के स्वरूप निर्धारण और विकास में गुप्त जी का योगदान अन्यतम् है। वे खड़ी बोली को काव्य–भाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने वाले प्रथम कवि हैं।